कैथी लिपि

सीखने की प्रारंभिक पुस्तक

विजय शंकर मल्लिक 'सुधापति'

कैथी लिपि

सीखने की प्रारंभिक पुस्तक

(सभी क्षेत्रों के लिए उपयोगी)

लेखक

विजय शंकर मल्लिक 'सुधापति'

मैथिली साहित्य संस्थान

भूमिका

श्री विजय शंकर मल्लिक 'सुधापति' द्वारा 'कैथी लिपि सीखने की प्रारंभिक पुस्तक' कैथी लिपि सीखनेवालों के लिए बहुत उपयोगी है। कैथी अक्षर लिखने, अभ्यास करने, स्वर-व्यंजन, संयुक्ताक्षर, अंक, पहाड़ा आदि के बारे में उपयोगी जानकारी दी गई है। श्री मल्लिकजी ने इसमें कैथी के विभिन्न प्रकार की लिखावटों के बारे में भी जानकारी देने का प्रयास किया है। कैथी सीखने के क्रम में होनेवाली कठिनाईयों के बारे में श्री मल्लिकजी को पर्याप्त अनुभव है। आशा है, कैथी लिपि सीखनेवाले इस पुस्तक की सहायता से कुछ ही घंटों में इस लिपि को सीख लेंगे।

कैथी लिपि सीख लेना एक बात है और कैथी में लिखे जमीन का दस्ता वेज पढ़कर अनुवाद कर लेने की क्षमता हासिल करना दूसरी बात है। जो लोग जमीन का दस्तावेज पढ़ना चाहते हैं उन्हें कैथी लिपि सीखने के बाद दस्तावेज लेखन विधि और इसमें प्रयोग किए जानेवाले फारसी शब्दों के अर्थ सीखना चाहिए। इसके लिए उन्हें अनुभवी लोगों का मार्गदर्शन लेना चाहिए।

कैथी लिपि को समाज में जागृत किया जाना अत्यंत आवश्यक है और यह काम तो बहुत पहले ही हो जाना चाहिए था। आज स्थिति एकदम विस्फोटक हो गई है। न्यायालय के जमीन-विवाद में प्रस्तुत कैथी के दस्तावेजों को पढ़ने की क्षमता यदि वकील और जज साहब में नहीं होगी तो न्याय की गुणवत्ता कैसी होगी? ऋण लेने के लिए जमीन के दस्तावेज बैंक में गिरवी रखनी है, मैनेजर साहब जानते ही नहीं हैं कि इस दस्तावेज में क्या लिखा हुआ है। जज साहब, वकील साहब, मैनेजर साहब, सारे साहब सिविल कोर्ट के बाहर बैठे कैथी अनुवादक पर निर्भर हैं। अब सारा खेल इस अनुवादक पर है और इसकी बात मानने के लिए साहब बाध्य हो रहे हैं। आज स्थिति ऐसी हो गई है कि पटवारी, कर्मचारी, सी.आई., सी.ओ., डी.सी.एल.आर. यानी सरकार के अमला, जिस पर 'जमीन प्रबंधन' का जिम्मा है, कैथी नहीं जानते हैं और दस्तावेज नहीं पढ़ सकते हैं। एक बड़ा 'शून्य ' उत्पन्न हो गया है और यह पूरे समाज में भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रहा है। 'सर्वे सेट्लमेंट' में रैयतों की स्थिति के बारे में तो एक पूरी किताब लिखी जा सकती है। हमारे पुरुखों ने हमारे लिए अमूल्य दस्तावेज रख

छोड़ा है। ये पाण्डुलिपियों के रूप में, धर्म ग्रंथों और आचार ग्रंथों के रूप में, गीत और पत्रों के रूप में हमारे बीच उपलब्ध हैं। हमें इन ग्रंथों को अपनी नई पीढ़ी को सौंपनी भी है और यह भार समाज के विद्वानों पर ही नहीं छोड़ देना चाहिए। स्थिति अत्यंत गंभीर है। लिपि सीखाने की कोई संस्था नहीं है। स्कूली पाठ्यक्रमों से बहुत पहले ही हटा दिया गया। उत्तर प्रदेश के स्कूली पाठ्यक्रम में पहले कैथी अनिवार्य थी, अब नामो-निशान नहीं है। बिहार में मैथिली पढ़नेवालों के लिए तिरहुता या मिथिलाक्षर अनुवाद के लिए दस-बीस अंक निर्धारित थे, जो अब हटा दिए गए। हटानेवालों के अपने तर्क थे। तिरहुता को भी जाति से जोड़ दिया गया। आज इस लिपि की भी स्थिति अत्यंत दयनीय है। बिहार से बाहर चले जाएं तो अन्य देशी लिपियों की स्थिति भी ऐसी ही है। मोदी हो, टाकरी हो, लांडा हो, शारदा हो, सारी लिपियाँ दफन हो रही हैं या कहिये तो दफन हो गई हैं। एक लिपि के मर जाने से एक सभ्यता का नाश हो जाता है। हम प्रयासरत हैं, कैथी और तिरहुता को फिर से जागृत किया जाए। इसके लिए लोगों में सीखने की प्रवृत्ति जागृत करनी होगी। यदि किसी व्यक्ति में सीखने की ललक है, कुछ पढ़ने की तमन्ना है तो यकीन मानिए, उसके अरमान जिन्दा हैं। जब तक सरकार का संरक्षण इन लिपियों को नहीं मिलेगा, संरक्षण कठिन है। मैंने कई अवसरों पर बिहार सरकार से कैथी लिपि को 'राज्य लिपि' दिए जाने की मांग की है। यदि ऐसा होता है तो सरकार के अधिकारियों को इसके संरक्षण, विकास एवं प्रशिक्षण के लिए योजनाएँ बनाना आसान हो जाएगा। मेरा सपना है कि स्कूली पाठ्यक्रमों में कैथी, तिरहुता या अन्य क्षेत्रिय लिपियों को स्थान मिले।

कैथी न तो किसी एक जाति की लिपि है और न ही एक भाषा की, एक क्षेत्र की। बिहार में मगही, भोजपुरी और मैथिली की यह प्रमुख लिपि रही है। यदि भोजपुरी लिपि को भारत के संविधान के अष्टम अनुसूची में जगह नहीं मिली है तो इसका एक बड़ा कारण है कि इन लोगों ने भोजपुरी के लिए कैथी लिपि का उल्लेख नहीं किया है। तीन सौ वर्ष से अधिक पुराने भोजपुरी-कैथी के दस्तावेजों और धार्मिक ग्रंथों का तो मैंने स्वयं अवलोकन किया है।

आशा है, यह पुस्तक आपको कैथी लिपि सीखने में अत्यंत सहायक होगी।

भैरव लाल दास

पटना

5 जुलाई, 2018

प्राक्कथन

बचपन में मैं अपने दादा जी के द्वारा लिखा गया पोस्टकार्ड देखा करता था किन्तु उसकी लिपि समझ नहीं पाता। क्योंकि हमलोगों को ककहरा की शिक्षा देवनागरी में दी जा रही थी। वर्षों बाद समझ पाया कि दादा जी सिर्फ कैथी लिपि में ही लिखते थे। वह भी तब जब उनके शरीर त्याग के वर्षों बीत चुके थे। हाँ, उन पोस्टकार्डों को या उनकी लिखी हुई कागजातों को जब कभी उलटता तो अपनी बुद्धि लगाकर पढ़ने से तथ्यों की समझ हो जाती थी।

मिथिलाक्षर की जानकरी पूर्णरूपेण 1965-66 में जब मैं रामकृष्ण महाविद्यालय में प्राक विज्ञान का छात्र था, तो हुई। उस समय मैथिली भाषा विषय में पाँच नम्बर का यह लिपि अनिवार्य हुआ करता था। कैथी लिपि के तरफ झुकाव मुझमे श्री भैरवलाल दास जी से प्रथम भेंट के बाद ही आया। एक साहित्यकार जब दूसरे साहित्यकार से आपसी वार्त्तालाप करते हैं तो साहित्य के क्षेत्र मे कुछ ना कुछ नयापन का अविर्भाव होता ही होता है। यह संयोग ही था कि श्री भैरव जी जैसा व्यक्ति जो 'कैथी का इतिहास' नामक पुस्तक लिखने के क्रम में अपनी आपबीती और कठिनाइयाँ तथा जिज्ञासा की चर्चा मेरे साथ की तो इस लिपि की प्रासंगिकता का बीज मेरे हृदय में पनपना स्वाभाविक ही था।

संयोग से मेरे पास एक हस्तलिखित पुस्तक (जिसमें साहित्य के बहुत सारे विधाओं को सन्निहित किया गया था) मेरे पास मौजूद था। इस पुस्तक को मैं अपने गाँव से विनष्ट हुए सारे कागजातों (पोथी-पतरों) के बीच से चून-बीछ कर लाया था और पूर्वजों की धरोहर के रूप मान संजोकर रखा था। जिज्ञासा वश उसका पूर्ण मनोयोग से अध्ययन-मनन करने लगा। फिर क्या था, मैं धरल्ले से इसे पढ़ने भी लगा और देवनागरी लिपि में इसका रूपान्तर भी करना शुरू कर दिया जो अभी पूर्ण नहीं हो पाया है क्योंकि यह बहुत विस्तृत है। जब भैरव जी का 'कैथी का इतिहास' छपा और मुझे मिला तो मैं और पुलकित हुआ और धीरे-धीरे इस लिपि के प्रचार-प्रसार में श्री भैरव जी एवं डॉ. श्री शिवकुमार मिश्र जी का सहयोगी भी बन गया।

दो साल से अधिक हुए मैं बिहार पुराविद परिषद् के तत्कालीन कार्यालयी हॉल में कैथी की औपचारिक शिक्षा हेतु बुलाया गया। वह कार्यशाला जैसा ही था, जहाँ करीब 25 जिज्ञासु कैथी सिखने पहुँचे थे। छः दिनों तक यह कार्यक्रम चला इसमें करीब 12 लोग कैथी लिपि के मर्म को समझे और उस समय इसे सीख पाने की स्थिति में आये। उस कार्यशाला में जितने भी लोग छात्र रूप में आये, चाहे वे जिस भी ओहदे के हों, सबों ने मुझसे आग्रह किया कि इस लिपि को सीखने के लिए एक प्रारंभिक पुस्तक लिखें। मैं इसे चैलेंज समझ स्वीकार किया और बोकरो इस्पात नगर पहुँच कर इस पर कार्य करना प्रारंभ कर दिया। मिहनत रंग लाया। पुस्तक तो तैयार हुई किन्तु कतिपय कारणों से इसकी छपाई में अधिक देर लगी। इसका मुख्य कारण प्रेस में फौन्ट (अक्षर) का अभाव होना है।

आज मुझे अत्यधिक खुशी हे कि डॉ. भवनाथ झा जैसे महान व्यक्तित्व ने इसे संभव कर डाला है और पुस्तक प्रकाशन की बाधायें समाप्त हो गये। मुझे विश्वास है कि जो भी व्यक्ति इस पुस्तक को मनोयोग पूर्वक प्रयत्न करेंगे वे चाहे किसी भी क्षेत्र के क्यों ना हों, कैथी लिपि अवश्य सीख जायेंगे। साथ ही साथ इस लिपि की महत्ता, उपयोगिता और प्रासंगिकता से लाभ उठा पायेंगे। हाँ, प्रशिक्षक की सहायता को कभी भी नकारा नहीं जा सकता है। यह शिक्षा ग्रहण करने वाले की आवश्यकतानुसार ही आँका जा सकता है।

इत्यलम्

विजय शंकर मल्लिक 'सुधापति'

बोकारो इस्पात नगर
दिनांक 13 जुलाई, 2018

पाठ-1

1. कैथी लिपि सीखनेवाले छात्र सर्वप्रथम स्वयं को इस बात के लिए तैयार करें कि इस नई कला से पूर्णरूपेण अनभिज्ञ हैं।
2. लिखने की यह कला पुरुखों की धरोहर है। अत: इसमें अपनी सोच घुसेड़ना विकृति का कारण बनेगा।
3. इस पुस्तक में, भारत के विभिन्न क्षेत्रों खासकर उत्तरी भाग में लिखे जाने वाले अक्षरों, युग्मों की मौलिकता के साथ छेड़छाड़ या मिश्रण, आगे व्यवधान उत्पन्न करेगा साथ ही साथ लेख्य को पढ़ना दुरुह और परेशानी का कारण बनेगा।
4. लिपि की मौलिकता के लिए कोई भी कृत्रिमता अमान्य है।
5. इसके प्रत्येक अक्षर तथा उसकी वर्त्तनी (मात्रा) सीख लेने के बाद शब्दों का संयोजन तथा वाक्य निर्माण में आज के समय में एक सावधानी मेरी सोच से अवश्य करनी चाहिए कि शब्दों के बीच कुछ जगह छोड़े जाएं जो पहले के लेख्य में नहीं मिलता और पढ़ने में दिक्कत होती है।
6. कैथी लिपि अपने किसी भी रूप में हो, शिरो रेखा यानी माथा विहीन होती है।
7. लेखकारों की कला भिन्नता को लिपि भिन्नता नहीं मानें।
8. बिना भावुक हुए या अपनी बुद्धि आजमाये, जस के तस लिखना ही स्वाभाविक और मौलिक (सही) होगा।
9. देवनागरी लिपि और कैथी लिपि के तुलनात्मक अध्ययन से यह स्वत: स्पष्ट होगा कि कैथी में कुछ अक्षर किसी-किसी क्षेत्र में नहीं हुआ करते। दूसरे अक्षरों से पूरे किए जाते हैं।
10. छात्रों को इस लिपि को सीखने, लिखने के क्रम में अपना धैर्य किसी भी स्थिति में खोना नहीं चाहिए।
11. यह पुस्तक सामान्यत: सभी शंकाओं के समाधान एवं निदान में सक्षम होगा। (ऐसा मेरा विचार है।)

पाठ-2

1. अक्षर 'अ' से लेकर 'अ:' तथा 'क' से 'ह' तक प्रत्येक अक्षर के लिए एक-एक प्रकोष्ठ दिए गए हैं।
2. प्रत्येक प्रकोष्ठ में एक ही अक्षर के सात विभिन्न रूप दिए गए हैं ताकि विभिन्न क्षेत्र के लोग अपने इलाके में प्रचलित कैथी के सही रूप को जानें और इसे क्षेत्रिय कला के रूप में लिखने का अभ्यास करें।

3. छात्र कभी भी विभिन्न रूपों को एक साथ सीखने की कोशिश नहीं करें।
4. क्षेत्रानुरूप अक्षरों का क्रमांक (कोड) दिए गए हैं जो इस प्रकार हैं- 1. देवनागरी 2. मिथिला 3. तिरहुतिया 4. भोजपुर 5. मगध 6. सामान्य 7. अन्य (कुछ विभिन्नता लिए या कॉमन)
5. ये सातों रूप पुस्तक को सर्वजन्य बनाने के मकसद से दिए गए हैं।
6. प्रत्येक अक्षर बायें से दाएं लिखें तथा कोई भी रेखा (दंड) ऊपर से नीचे की ओर लिखे जाएं।
7. शिरोरेखा विहीन होने के कारण हर समय ध्यान रहे कि प्रत्येक अक्षर का एक काल्पनिक शिरोरेखा विद्यमान है। इससे पंक्ति सीध में होगी तथा लेखकीय शोभा बढ़ेगी।
8. इसमें कुछ अक्षर एकरुपता लिए होते हैं तथा कुछ विभिन्नता।
9. 'क' से 'म' तथा 'य' से 'ह' तक आगे के पृष्ठों में दिए गए प्रकोष्ठों में भी नियम समान रूप से लागू हैं।
10. प्रकोष्ठों में जहां भी जगह खाली पड़ा है, यह इस बात का द्योतक है कि उस क्षेत्र के अनुसार वे अक्षर नहीं होते। जैसे मिथिला क्षेत्र में 'श' 'ष' 'स' के लिए एक ही 'ㅂ' प्रयुक्त होता है परन्तु 'क्ष त्र ज्ञ' किसी में भी नहीं होते। इसके लिए 'छ' 'तर' 'ग्य' का प्रयोग होता है।

    हाँ, जहाँ कैथी का रूप नागरी या अन्य किसी लिपि से अपना सान्निध्य बनाये हुए है वहां उसी रूप में 'क्ष' 'त्र' या 'ज्ञ' जैसा अक्षर या युग्म अक्षरों के लिखने का प्रचलन है।
11. सभी क्षेत्रों और लेखकारों की लिखने की शैली स्वभाविक रूप से भिन्नता लिए हो सकता है। यह अभ्यास और कला पर भी निर्भर करता है।
12. छापाखानों में छापे गए अक्षर अपना मानक (Standard) लिए होता है इसलिए साफ-साफ दिखाई देता है, किन्तु हस्तलिखित अक्षरों में भिन्नता स्वभाविक है।

पाठ-3

1. वर्तनी का अर्थ स्वर एवं व्यंजन का योग (संधि) हूबहू देवनागरी की तरह ही होता है।
2. ध्यान देने की बात है कि सभी क्षेत्रों में वर्तनी का रूप एक सा है, वह देवनागरी से मिलता-जुलता है किन्तु तिरहुत या मिथिला परिक्षेत्र के कुछ युग्म अक्षर अपनी अलग पहचान बनाए हुए हैं। ऐसा रूप दूसरे क्षेत्रों में नहीं पाये जाते हैं।

3. कैथी लिपि सामान्यत: 'ह्रस्व' या 'दीर्घ' के स्थान पर 'दीर्घ' को अधिक प्रश्रय देता आया है। यथा 'कु', 'कि' के लिए मात्रा 'कू', 'की'। हालांकि आज के समय में जहां उच्चारण पर प्रमुखता से ध्यान दिया जाता है ह्रस्व और दीर्घ का प्रयोग करना ही सही होगा।
4. दो व्यंजनों के योग (समायोजन) वाले पाठ में इसके स्वरूप में भिन्नता दिखाया गया है।
5. किसी किसी क्षेत्र में युग्म अक्षरों का प्रावधान देवनागरी से लिया गया है तथा अधिकतर क्षेत्रों में युग्म का प्रयोग नहीं कर दोनों अक्षरों को एक दूसरों के बाद वैसे ही लिख दिया जाता है। पढ़ने वाले इसे पढ़ लेते हैं।
6. चंद युग्मों की अपनी मौलिकता क्षेत्र विशेष में प्राप्य है।
7. साधारणतया इस लिपि में 'य' की जगह 'ए', 'ऐ' का तथा 'ए', 'ऐ' की जगह 'अ' में मात्रा लगाया गया मिलेगा। और की जगह 'वो' या 'वौ' का प्रयोग धड़ल्ले से हुआ है।
8. 'ण' और 'न' की जगह 'न' को लिखना पहले के लोग अधिक पसंद करते थे। हाँ, संस्कृत लिखने में 'ण' की प्रमुखता के कारण अधिक व्यवहार मिलता है।

पाठ-4

1. कैथी लिपि में जो भी भाषा लिखे गये वे आज के भाषायी रूपों से भिन्न हैं। अत: आज इसे पढ़ने में दिक्कत आना स्वभाविक है। हिन्दी, उर्दू, फारसी, अंग्रेजी की मिली-जुली भाषा व्याकरण के नियमों पर खड़ा उतरे यह कोई जरूरी नहीं। बल्कि बिल्कुल ही अलग-सा है।
2. कैथी की लिखावट में सभी शब्द प्राय: एक दूसरे से सटे-सटे रहते हैं। इसलिए पढ़नेवालों को शब्दों को अलग कर उसके अर्थ को समझने की कला विकसित करनी चाहिए। इसे बार-बार पठन, मनन कर अनुभव बनाना होगा। इसके लिए धैर्य और लगातार इस तरफ ध्यान रखना आवश्यक है।
3. दस्तावेजों या उसके नकल को पढ़ने अथवा समझने हेतु उर्दू फारसी के उपयोगी शब्दों की (जो सरकारी कोर्ट कचहरी या अन्य कार्यालयों में प्रयोग हुए हैं तथा व्यापारिक बही खातों में उच्चारित होते आए हैं) जानकारी करना भी अतिआवश्यकहै।
4. सरकारी दस्तावेजों या अन्य उदाहरणों में आज के नियमानुसार पूरा वाक्य बहुत कम ही पाए जाते हैं। प्राय: अक्षरों 9की वर्तनी भी अस्पष्ट होने के साथ-साथ

स्वरों और व्यंजनों के मायने निकालना खुद के अनुभव पर निर्भर करता है।

5. कैथी में संस्कृत भाषा भी लिखे गए किन्तु वहां अक्षरों का योग तथा वर्तनी (मात्रा वगैरह) का उपयोग कुछ इस तरह किया गया है कि जो एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र की कैथी लिपि के बीच तथा देवनागरी से मेल खाते दिखती है। कथा, उपाख्यान या श्लोक प्रायः श्रुत और कंठस्थ हुआ करते थे। अतः अधिकाधिक शब्द अन्दाज या अपनी बुद्धि विलास का उपयोग कर पढ़ा और समझा जाता था।

6. अपनी बातें लिखते समय लिपि की शुद्धता तो चाहिए ही लेकिन हमेशा यह ध्यान रहे कि लिखावटों की सुन्दरता एवं स्वरूप हमेशा कायम रहे जैसा कि पूर्व के लेखकारों ने किया हैं।

7. कोई भी लेखन किसी दूसरे के लिए होता है अतः लिखावट ऐसी हो कि सभी पढ़ सकें। यह हिदायत सभी भाषाओं एवं लिपि पर एक सा लागू होता है। इसका ध्यान रहे कि लिखावट सुस्पष्ट हो।

8. इस पुस्तक में अक्षर, शब्द, वाक्य सभी का वास्तविक स्वरूप क्षेत्रानुसार साफ-साफ अंकित है। प्रारंभिक पाठ से ही लिखना, सीखना और समझना चाहिए।

9. पूर्ण विराम, अर्द्ध विराम या संबोधन के चिह्न सामान्यतया इस तरह होता है। रेफ के लिए (̒) या अनुस्वार के लिए (̇) का प्रयोग वर्तनी से पूर्व लगाया रहता है। यह देवनागरी के उलट है- जैसे 'र्क' के लिए 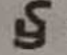 कीं के लिए 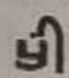

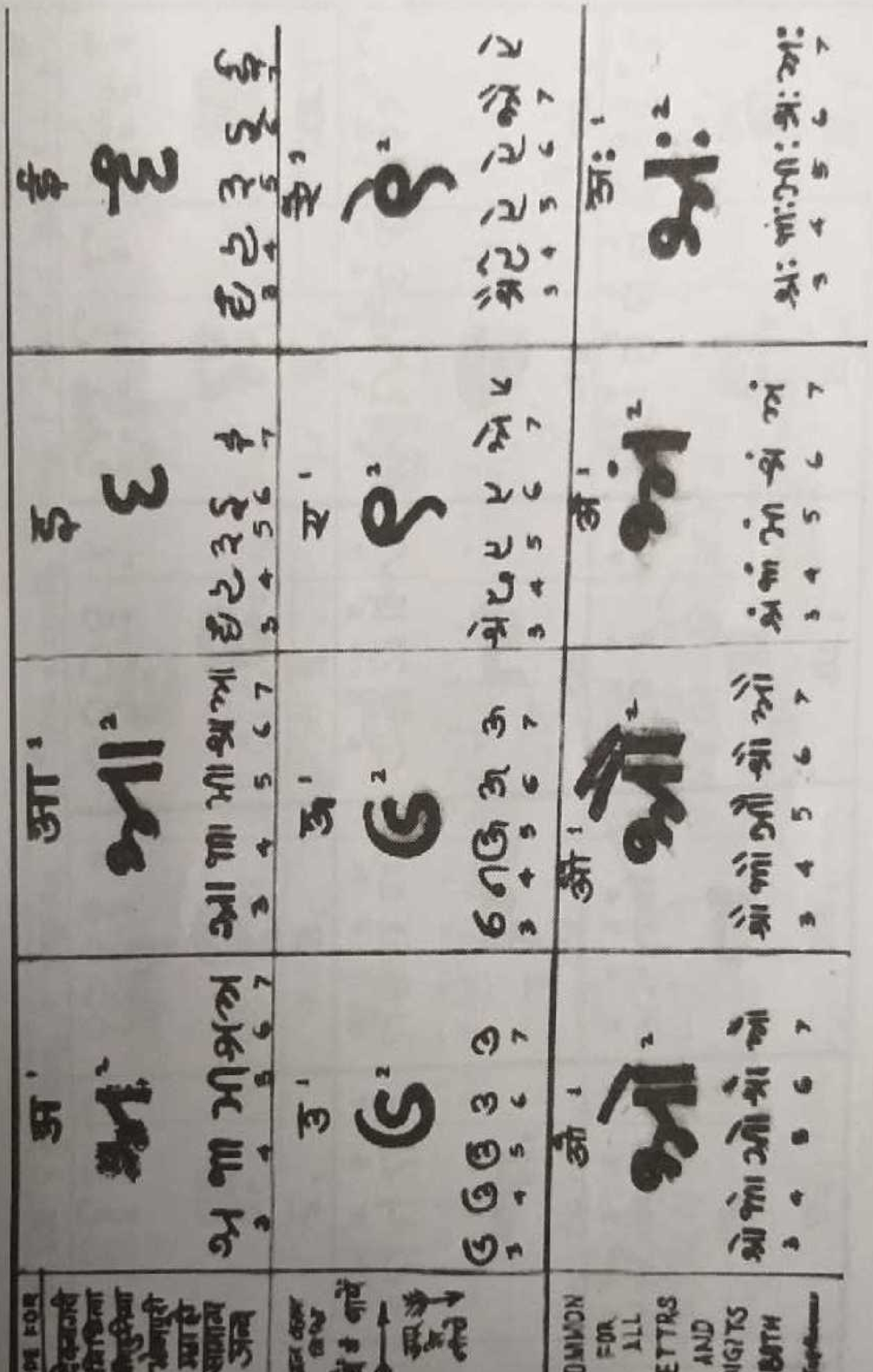

CODE FOR
1 देवनागरी
COMMON FOR ALL LETTRS AND DIGITS
अ
आ
इ
ई
उ
ऊ
ए
ऐ
ओ
औ
अं
अः

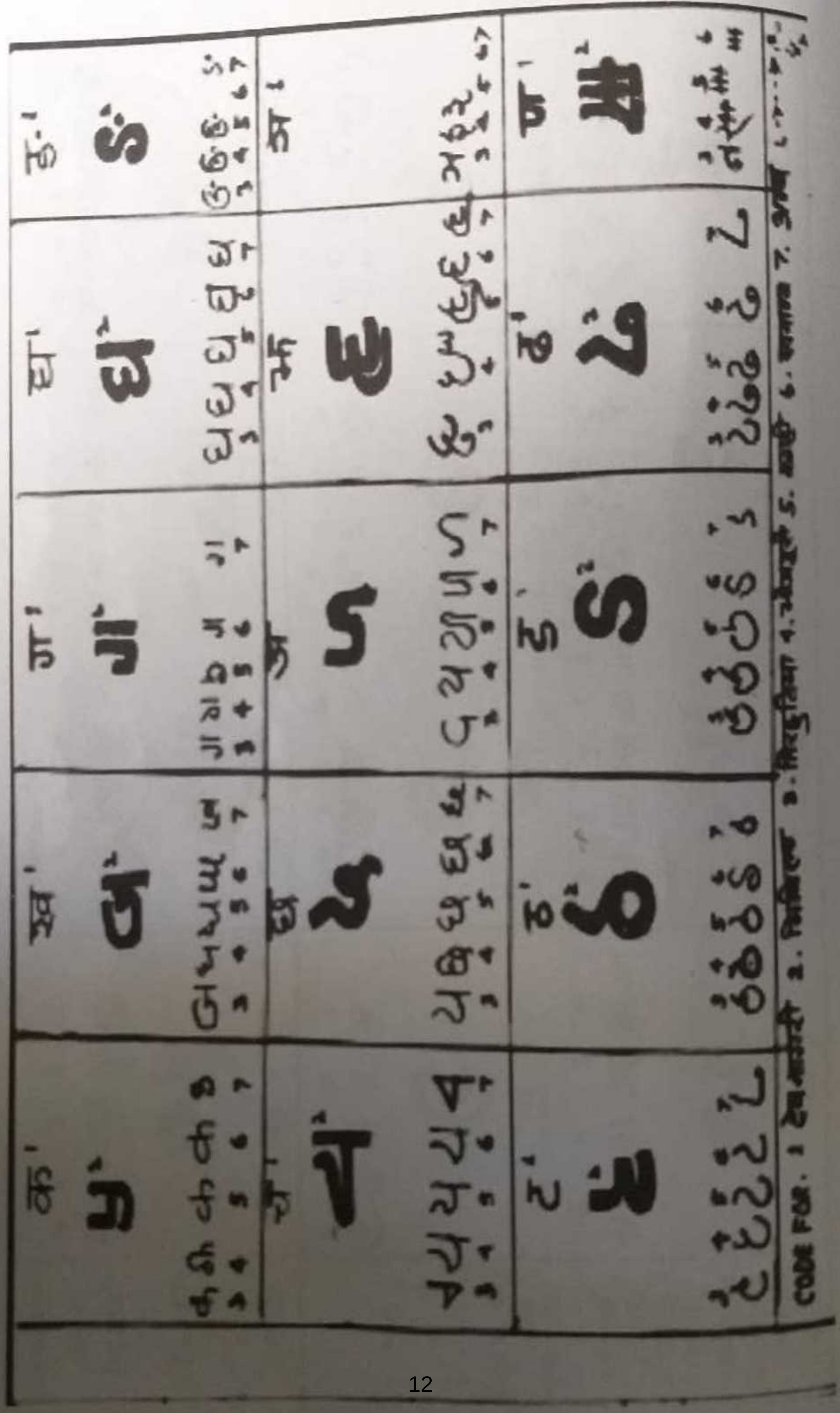
क
ख
ग
घ
ङ
च
छ
ज
झ
ञ
ट
ठ
ड
ढ
ण
CODE FOR. 1 देवनागरी

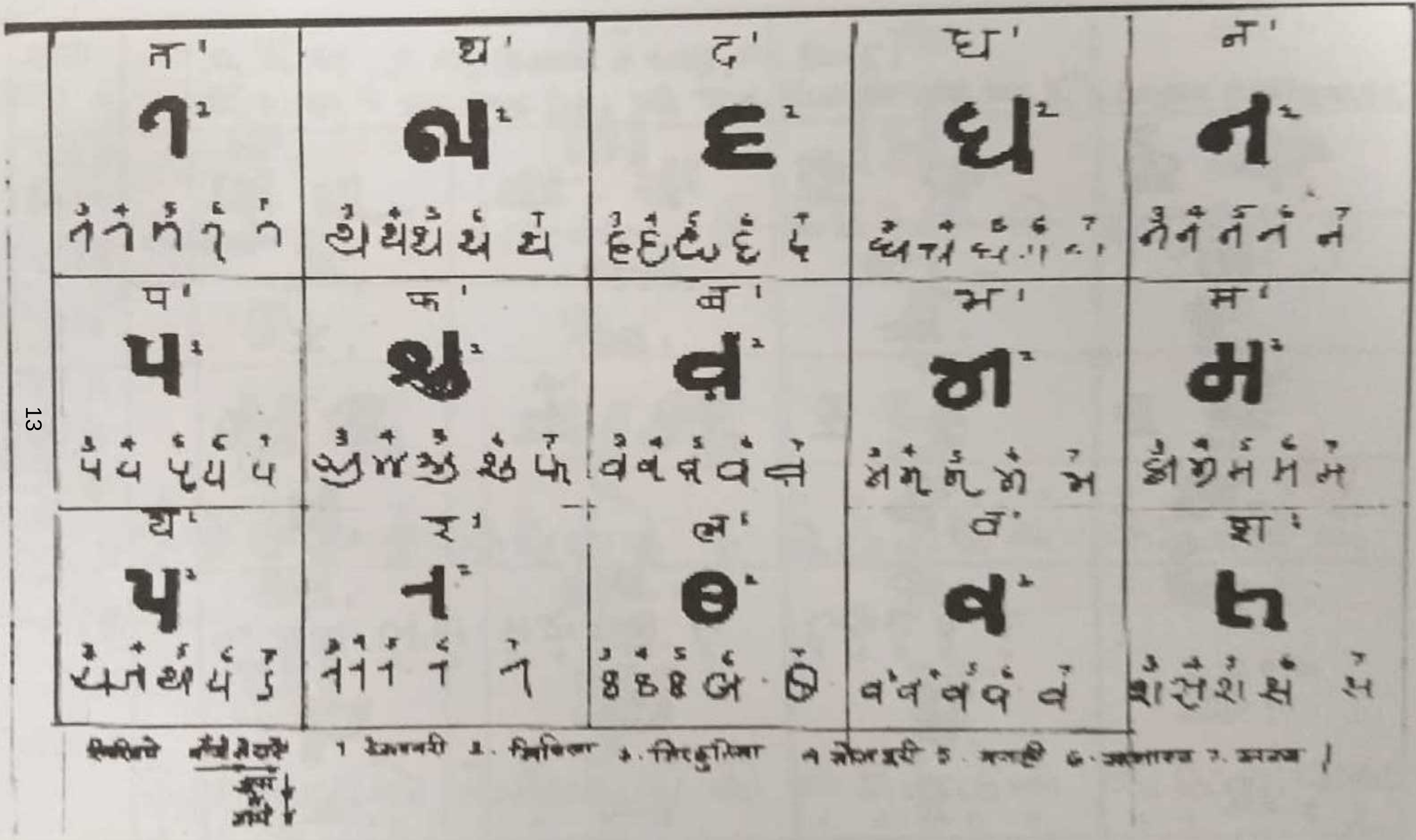
त थ द ध न
प फ ब भ म
य र ल व श

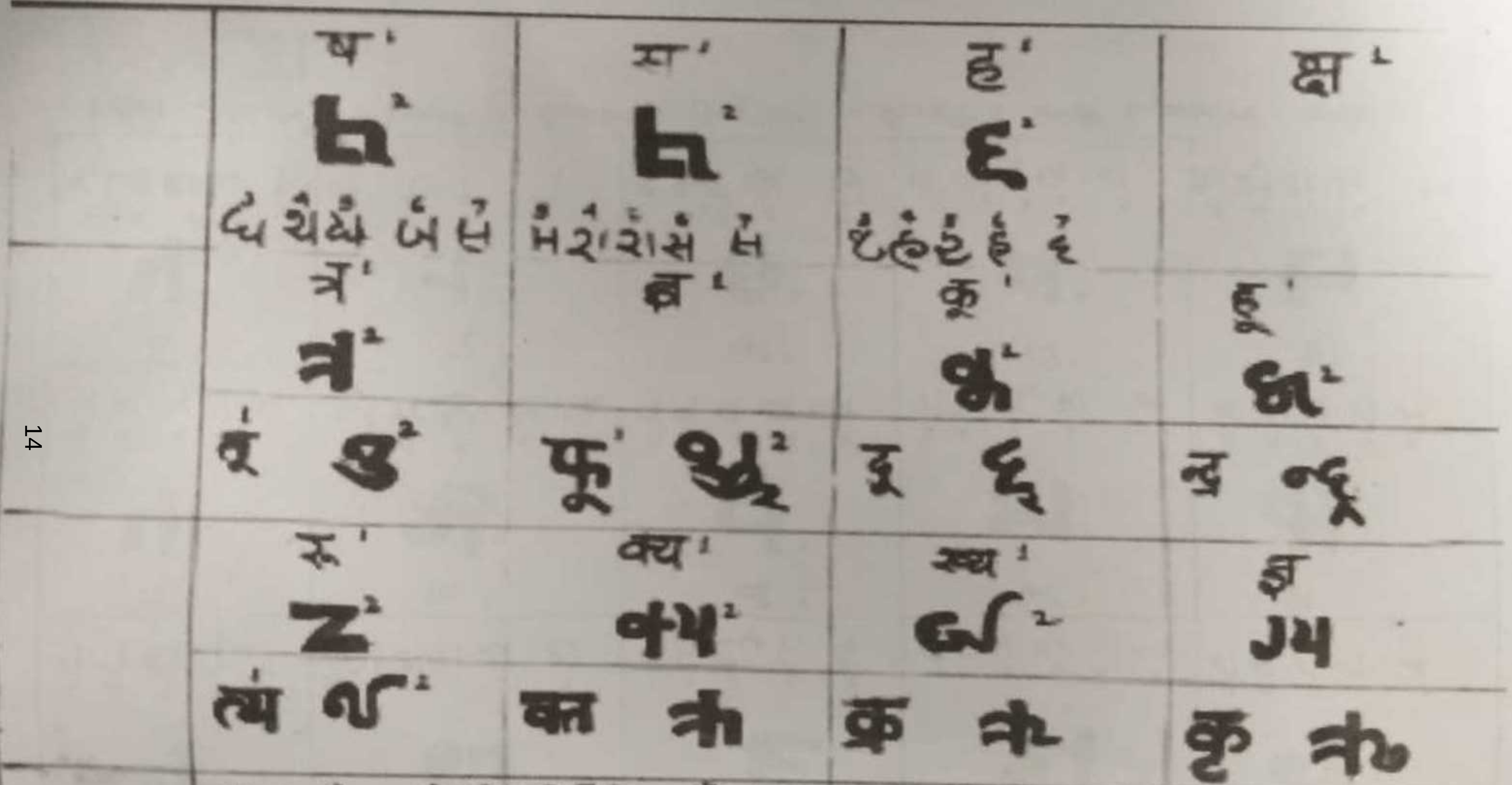

क्ष, त्र, और ज्ञ कैथी मे नहि होते। यहाँ जो भी युग्माक्षर दिये गये हैं, वे मिथिला क्षेत्रिय कैथी के हैं।
'श' 'ष' एवं 'स' के बदले मिथिला मे इनकी '[illegible]' होता है।

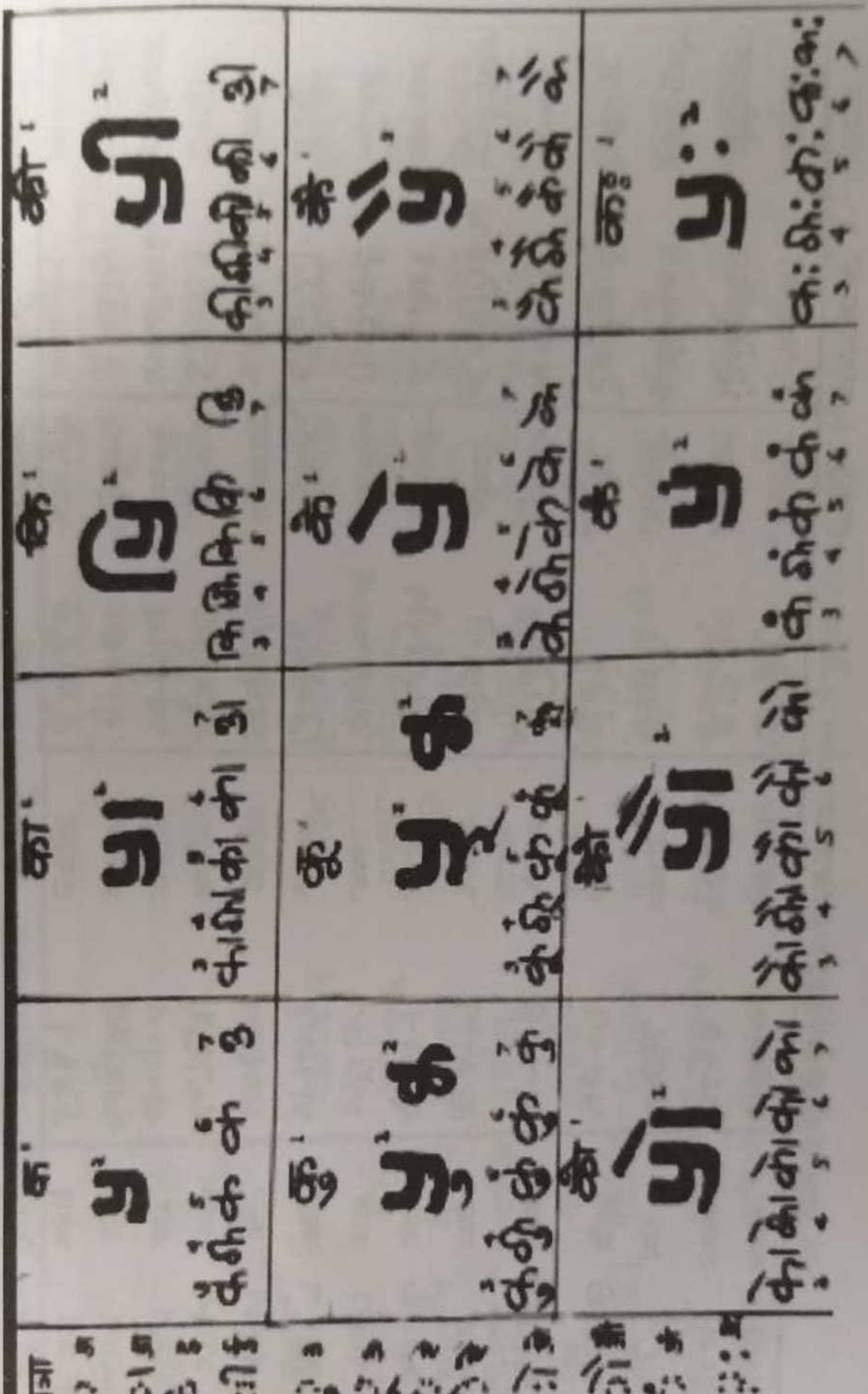

शब्द ([illegible] के बिना) मिश्रित			
[illegible]	कमल	[illegible]	सलजम
[illegible]	शकल	[illegible]	कटहल
[illegible]	गटर	[illegible]	पनघट
[illegible]	फसल	[illegible]	बसमत
[illegible]	आकार	[illegible]	पारवल
[illegible]	रपट	[illegible]	झकझर
[illegible]	अपढ़	[illegible]	दमकर
[illegible]	रतन	[illegible]	जलकर
[illegible]	फहर	[illegible]	भरमत
[illegible]	महल	[illegible]	मजहब
[illegible]	भजन	[illegible]	छरहर
[illegible]	बटर	[illegible]	सरजाम
[illegible]	चपत	[illegible]	झपमल
[illegible]	झगड़	[illegible]	ठकहर
कैथी —	देवनागरी	कैथी —	देवनागरी

शब्द ([illegible]) मिश्रित			
[illegible]	कैलिह	[illegible]	हायारानी
[illegible]	कुटिल	[illegible]	मोदीगाव
[illegible]	साँवरो	[illegible]	लालीपुनी
[illegible]	मुंगेर	[illegible]	टेकरीवाल
[illegible]	पुलकिआ	[illegible]	मायाकारी
[illegible]	बौकनो	[illegible]	भूमीनिमैया
[illegible]	हाजीपीर	[illegible]	कौटाहार
[illegible]	बाबाधाम	[illegible]	नड़ीनाली
[illegible]	सिरीडीह	[illegible]	बीढ़ढ़ी
[illegible]	गुमलाडीह	[illegible]	आसानी
[illegible]	पुरखलवा	[illegible]	ठीकदार
[illegible]	भारतीय	[illegible]	पालीवाल
[illegible]	हीरोल	[illegible]	भूमरोला
[illegible]	भुलाभूलि	[illegible]	झलाधार
कैथी —	देवनागरी	कैथी —	देवनागरी

संयुक्ताक्षर युक्त शब्द (मिथिला)

[illegible]	तुम्हारी	[illegible]	सज्जन	[illegible]	चन्दनक्यारी	[illegible]	वाल्मीकी
[illegible]	कृती	[illegible]	प्रयत्न	[illegible]	तीर्थंकर	[illegible]	पुष्कर
[illegible]	दीर्घ	[illegible]	पल्लव	[illegible]	परिक्रम	[illegible]	आँग्ल
[illegible]	त्वास्थ्य	[illegible]	कृतीत्व	[illegible]	कर्मयोग	[illegible]	वृन्दावन
[illegible]	आसक्त	[illegible]	प्रत्यक्ष	[illegible]	विस्फोट	[illegible]	ठक्कर
[illegible]	सिद्धार्थ	[illegible]	त्रिगुणी	[illegible]	शिखर	[illegible]	विध्वंसक
[illegible]	चतुर्भुज	[illegible]	स्पर्धा	[illegible]	ध्रुवतारा	[illegible]	अर्पित
[illegible]	ऊर्जा	[illegible]	द्रवड	[illegible]	फार्मूला	[illegible]	कतृवाच्य
[illegible]	पर्सलिटी	[illegible]	द्रुतगामी	[illegible]	सुप्रसिद्ध	[illegible]	हृदय
[illegible]	अन्तर्गत	[illegible]	इन्द्रप्रस्थ	[illegible]	धृतराष्ट्र	[illegible]	[illegible]
[illegible]	प्रशिक्षित	[illegible]	[illegible]	[illegible]	शुतुर्मुर्ग	[illegible]	पुनर्नवा

नोट:- भोजपुर, मगध या अवध में सामान्यतया संयुक्ताक्षरों का प्रयोग नहीं किया गया है।

अभ्यास पाठ - 1 अकहरा

देवनागरी[1]	मिथिला[2]	तिरहुत[3]	भोजपुरी[4]	मगही[5]	सामान्य
कमल	𑂍𑂧𑂪	𑂍𑂧𑂪	𑂍𑂧𑂪	𑂍𑂧𑂪	𑂍𑂧𑂪
गजरथ	𑂏𑂔𑂩𑂟	𑂏𑂔𑂩𑂟	𑂏𑂔𑂩𑂟	𑂏𑂔𑂩𑂟	𑂏𑂔𑂩𑂟
परवल	𑂣𑂩𑂫𑂪	𑂣𑂩𑂫𑂪	𑂣𑂩𑂫𑂪	𑂣𑂩𑂫𑂪	𑂣𑂩𑂫𑂪
झरकल	𑂕𑂩𑂍𑂪	𑂕𑂩𑂍𑂪	𑂕𑂩𑂍𑂪	𑂕𑂩𑂍𑂪	𑂕𑂩𑂍𑂪
खसपर	𑂎𑂮𑂣𑂩	𑂎𑂮𑂣𑂩	𑂎𑂮𑂣𑂩	𑂎𑂮𑂣𑂩	𑂎𑂮𑂣𑂩
दमझम	𑂠𑂧𑂕𑂧	𑂠𑂧𑂕𑂧	𑂠𑂧𑂕𑂧	𑂠𑂧𑂕𑂧	𑂠𑂧𑂕𑂧
नलफल	𑂢𑂪𑂤𑂪	𑂢𑂪𑂤𑂪	𑂢𑂪𑂤𑂪	𑂢𑂪𑂤𑂪	𑂢𑂪𑂤𑂪
नरपत	𑂢𑂩𑂣𑂞	𑂢𑂩𑂣𑂞	𑂢𑂩𑂣𑂞	𑂢𑂩𑂣𑂞	𑂢𑂩𑂣𑂞
भरसक	𑂦𑂩𑂮𑂍	𑂦𑂩𑂮𑂍	𑂦𑂩𑂮𑂍	𑂦𑂩𑂮𑂍	𑂦𑂩𑂮𑂍
अधजल	𑂃𑂡𑂔𑂪	𑂃𑂡𑂔𑂪	𑂃𑂡𑂔𑂪	𑂃𑂡𑂔𑂪	𑂃𑂡𑂔𑂪
मलयत	𑂧𑂪𑂨𑂞	𑂧𑂪𑂨𑂞	𑂧𑂪𑂨𑂞	𑂧𑂪𑂨𑂞	𑂧𑂪𑂨𑂞
छलकथ	𑂓𑂪𑂍𑂟	𑂓𑂪𑂍𑂟	𑂓𑂪𑂍𑂟	𑂓𑂪𑂍𑂟	𑂓𑂪𑂍𑂟

अभ्यास पाठ - 2 (वर्त्तनी युक्त)

देवनागरी	मिथिला	तिरहुत	भोजपुरी	मगही	सामान्य
किसान	𑂍𑂱𑂮𑂰𑂢	𑂍𑂱𑂮𑂰𑂢	𑂍𑂱𑂮𑂰𑂢	𑂍𑂱𑂮𑂰𑂢	𑂍𑂱𑂮𑂰𑂢
पिटारा	𑂣𑂱𑂗𑂰𑂩𑂰	𑂣𑂱𑂗𑂰𑂩𑂰	𑂣𑂱𑂗𑂰𑂩𑂰	𑂣𑂱𑂗𑂰𑂩𑂰	𑂣𑂱𑂗𑂰𑂩𑂰
दूधिया	𑂠𑂳𑂡𑂱𑂄	𑂠𑂳𑂡𑂱𑂨𑂰	𑂠𑂳𑂡𑂱𑂨𑂰	𑂠𑂳𑂡𑂱𑂨𑂰	𑂠𑂳𑂡𑂱𑂨𑂰
परिधान	𑂣𑂩𑂱𑂡𑂰𑂢	𑂣𑂩𑂲𑂡𑂰𑂢	𑂣𑂩𑂲𑂡𑂰𑂢	𑂣𑂩𑂲𑂡𑂰𑂢	𑂣𑂩𑂲𑂡𑂰𑂢
तिलावत	𑂞𑂱𑂪𑂰𑂫𑂞	𑂞𑂱𑂪𑂰𑂫𑂞	𑂞𑂱𑂪𑂰𑂫𑂞	𑂞𑂱𑂪𑂰𑂫𑂞	𑂞𑂱𑂪𑂰𑂫𑂞
गोपालगंज	𑂏𑂷𑂣𑂰𑂪𑂏𑂁𑂔	𑂏𑂷𑂣𑂰𑂪𑂏𑂁𑂔	𑂏𑂷𑂣𑂰𑂪𑂏𑂁𑂔	𑂏𑂷𑂣𑂰𑂪𑂏𑂁𑂔	𑂏𑂷𑂣𑂰𑂪𑂏𑂁𑂔
अहंकार	𑂃𑂯𑂁𑂍𑂰𑂩	𑂃𑂯𑂁𑂍𑂰𑂩	𑂃𑂯𑂁𑂍𑂰𑂩	𑂃𑂯𑂁𑂍𑂰𑂩	𑂃𑂯𑂁𑂍𑂰𑂩
निखिलेश	𑂢𑂱𑂎𑂱𑂪𑂵𑂮	𑂢𑂱𑂎𑂱𑂪𑂵𑂬	𑂢𑂱𑂎𑂱𑂪𑂵𑂮	𑂢𑂱𑂎𑂱𑂪𑂵𑂬	𑂢𑂱𑂎𑂱𑂪𑂵𑂬
तिवारीजी	𑂞𑂱𑂫𑂰𑂩𑂲𑂔𑂲	𑂞𑂱𑂫𑂰𑂩𑂲𑂔𑂲	𑂞𑂱𑂫𑂰𑂩𑂲𑂔𑂲	𑂞𑂱𑂫𑂰𑂩𑂲𑂔𑂲	𑂞𑂱𑂫𑂰𑂩𑂲𑂔𑂲
हथौरा	𑂯𑂟𑂸𑂩𑂲	𑂯𑂟𑂸𑂩𑂰	𑂯𑂟𑂸𑂩𑂰	𑂯𑂟𑂸𑂩𑂰	𑂯𑂟𑂸𑂩𑂰
पिरीतिया	𑂣𑂱𑂩𑂲𑂞𑂲𑂄	𑂣𑂱𑂩𑂲𑂞𑂱𑂨𑂰	𑂣𑂱𑂩𑂲𑂞𑂲𑂄	𑂣𑂱𑂩𑂲𑂞𑂲𑂨𑂰	𑂣𑂱𑂩𑂲𑂞𑂱𑂨𑂰

अभ्यास पाठ - 8

देवनागरी लिपि-भाषा हिन्दी

तिरहुत, मिथिला, भोजपुर, मगध, नेपाल के मधेशिया यानि तराई इलाकाओं के साथ सन्थाल क्षेत्र और बिहार के पूर्वी-दक्षिणी भागो में भी कैथी लिपि का प्रचलन धरल्ले से हुआ करता था। १९५० के पूर्व और बाद भी सभी साक्षर अक्सर हाँ अपनी आवश्यकतानुसार इस लिपि को ही प्रयोग मे लाते थे। जैसा कि हम देखते हैं, पत्र लेखन दस्तावेज, साहित्य एवं अन्य अभिलेखों का माध्यम यही था। इस लिपि को छापने के लिए छापाखाना इक्के दुक्के ही थे। अधिकतर लोग सामान्य कागजों के बदले भोजपत्र, तालपत्र या मसहा कागज का व्यवहार करते थे। साधारणतया नरकट या करची (बाँस की टहनी) के कलम से लिखते थे। रोशनाई खुद ही बनाकर दवात मे रखवा करते थे। कैथी लिपि में लिखने वाले लोग अपनी योग्यता और कला प्रवीणता के अनुसार ही लिखावट करते, जो उनकी खास होती थी।

कैथी लिपि - भाषा हिन्दी

तिरहुत-मिथिला-भोजपुर-मगध-नेपाल के मध्यकाल आदि तथा इलाकों के साथ बंगाल देश और बिहार के पूर्वी-दक्षिणी भागों में भी कैथी लिपि का प्रचलन काफी था। कुछ अंग्रेजी शासनकाल के पूर्व और बाद भी सभी सरकारी अदालतें अपनी आवश्यकतानुसार इस लिपि को ही प्रयोग में लाती थी। जैसा कि हम देखते हैं - पत्र लेखन दस्तावेज साहित्य एवं अन्य अभिलेखों का माध्यम रहा यह लिपि को छापने के लिए छापाखाना है जिसके कुछ छपे ही थे। शिक्षित लोग सामान्य कामकाज के लिए पत्राचार तथा पत्र या इलाज आदि का बहीखाता आदि में सामान्यतया नापतौल व्यापारी (जैसे महाजनी) के ढंग से लिखते थे। लोग ना हि कुछ ही बनाकर रखने में गलती करते थे। कैथी लिपि में लिखने वाले लोग अपनी योग्यता और उम्र अवस्था के अनुसार ही लिखावट अलग-अलग उनकी भाषा होती थी।

अभ्यास

देवनागरी - भाषा तिरहुतिया

रे मनसुखा एतना देर कहाँ रहने। तखनी से तोरा बोलावत रही मुदा आवाज ना सुनले। रे तों बहिर हुले का? पंडित आके कखनी से बैसल हथीन, तोरे चैरा ताकत हथीन आ एक तों हो जे डुमरी के फूल जइसे छेने मे बीला भेले। खैर ठीक ही हेने हुन। आपन बस्ता लेके आ। आज से ई पंडीत जी तोरा संस्कृत पढ़ावल करथुन। एहे टेम पर डेली दुरा पर बैठल रहिहे। आ हे खूब मनलगाके पढ़िहे लिखिहे बूझले। ओ पंडित जी! ई लैड़का पढ़े मे त' तेज है लेकिन खेल मे बरोहर बन गेल है। अपने के तनी अधि-के धिआन देवे के परत। कैसे भी एकरा संस्कृत पढ़ा दीऊ। ए खेलौरिआ के संस्कारो के बात सीखावे के परत। पैसा कौड़ी के सोच ना करऊ। हमरा ई बातके ज्ञान है जे गुरुजी खुसहाल तखही ने चटिया अच्छा से पढ़त।

पाठ-4

कैथी लिपि भाषा लिखुतिया

[illegible]

देवनागरी लिपि - भाषा भोजपुरी

वीर कुँवर सिंह जैसन राजा पर पूरे देश के गर्व बा। अब तो ओह समय के खीसा कहेवाला केहू ना बाँचल हउए। ई इतिहास मे स्वर्णाक्षर में लिखाइल हऽ। आज लरिकन सभे इहे कुल्ही पढ़के मालुम करत बा। ओ भोजपुर के रहन। ई पूरा संसार जानता कि ओ कइसे अंगरेजवन के दाँत खट्टा कइलन। एक अस्सी बरीस के बूढ़ आपन राजधर्म के रक्षा करे खातिर जीजान लगाके अंग्रेज लड़वइया के धक्का छोड़ा दिहलें। ओ कतनो परयास कैलस पर इनका पकड़ला से नाकाम रहल। बाबू कुँवर सिंह जब गंगा पार करत रहन आ ब्रिटिस सिपाही के बंदूक का गोली उनकर बहिंया छेद दिहल तो ऊ आपन बाँह झट से काट गंगा मैया के समरपित कर दिहले।

कैथी लिपि - भाषा भोजपुरी

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

विभिन्न अंक तालिका

देवनागरी	मिथिला	तिरहुति	भोजपुरी	मगही	सामान्य	अन्य
१	१	१	१	१	१	1
२	२	2	२	२	२	2
३	३	3	३	3	३	3
४	४	४	४	४	४	४
५	५	५	५	५	५	५
६	६	६	६	६	६	६
७	७	७	७	७	७	७
८	८	८	८	८	८	८
९	९	९	९	९	९	✓
१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
११	११	११	११	११	११	११
१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३
१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४
१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५
१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६
१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७
१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८
१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९
२०	२०	20	२०	२०	२०	२०

जमीनी माप तालिका

लम्बाई :—

१२ अंगुल = एक बित्ता = ९ इन्च
२ बित्ता = एक हाथ = १८ इंच = १½ फीट
२ हाथ = एक गज = ३६" = ३ फीट
220 गज = एक फरलांग
८ फरलांग = एक माइल (१.६१ किलोमीटर)
2 माइल = एक कोस

क्षेत्रफल :–

लम्बाई × (गुणे) चौड़ाई = क्षेत्रफल
१ लग्गी × १ लग्गी = १ धूर
२० धुरकी = १ धूर
२० धूर = १ कट्ठा
२० कट्ठा = १ बीघा

क्षेत्र क्षेत्र मे लग्गी की लम्बाई अलग होती है - ६, ६½, ७, ८½, ९, १३ हाथ (नेपाल)

S0S१ — १ धुरकी S0S2 — 2 धुरकी S0S3 — 3 धुरकी S0S४ — ४ धुरकी S0S1. — ५ धुरकी S0S1१ — ६ धुरकी S0S12 — ७ धुरकी S0S13 — ८ धुरकी S0S1४ — ९ धुरकी S0S11. — १० धुरकी S0S111. — १५ धुरकी S0१ — १ धूर S0२ — २ धूर S0३ — ३ धूर S0४ — ४ धूर S1. — ५ धूर S1१ — ६ धूर S11 — १० धूर	लिखावट	S111 — १५ धूर S१ — १ कट्ठा S2 — 2 कट्ठा S3 — 3 कट्ठा S४ — ४ कट्ठा 1S — ५ कट्ठा 11S — १० कट्ठा 111S — १५ कट्ठा १S — १ बीघा १S१S४ — १ बीघा १ कट्ठा ४ धूर ३S ५S४111 २ बीघा ५ कट्ठा पौने ५ धूर इसी तरह आगे भी

27

अभ्यास - 6

देवनागरी लिपि - भाषा मगही

राजा दसरथ के चार बेटवा हल थीन। बड़का बेटवा राम ओकर बाद भरत तेसर लछुमन आ सतरूघन चरिमा लेकिन कहीं में राम-लछुमन-भरत आ सतरूघन कहले लगल। जब राम वन फिर हेलथीन त सीता मइया साथ हो गेलथी। भरत ननिहाल घुमे रह गेल लछुमन के आनस लग गेल। वनही में लंकापति रावण सीताजी के हरण केलक। जटायु अपना भर लड़ल। रावण ओकर पँखे काट देलथी। लाचार ओ धरती पर गिर गेल। राम-राम पीरत किष्किन्धा में सुग्रीव, हनुमान के जामवन्त से मिलके, श्रीराम, सीता के पता लगौलथी। लंका के अशोक वन में एक पेड़ के नीचे जगजननी जानकी हवी से सम्पाती अपन गीद्ध दृष्टि से देखल की राम के सही सही कह देले। तब भगवान समुंदर पर पाथर के पुल बना लंका परवेश करके बन्दर सेना ले चढ़ाई केलथी। हनुमान, अंगद यहाँ के लंकादेश घूम लेले रहे। लंका जीत सीता के राम अयोध पधारले।

कैथी लिपि - भाषा मगही

[illegible]

देवनागरी - भाषा हिन्दी

श्री भैरव लाल दास की प्रकाशित पुस्तक "कैथी लिपि का इतिहास" का मैंने उत्सुकता पूर्वक अवलोकन किया और इसकी उपयोगी-दृष्टि और अथक साधना से आश्वस्त हुआ। इनके भीतर एक अनुसंधित्सु की अपार जिज्ञासा और लम्बी दूरी के धावक का धैर्य है।

वस्तुतः 'लिपि' का इतिहास मानव सभ्यता के विकास के साथ जुड़ा है। भाषा और लिपि में संकेत चिन्हों का प्रयोग और प्रचलन का आधार प्रकृति और जीवन के विभिन्न उपादान रहे हैं। मनुष्य में अनुकरण की सहज प्रवृत्ति होती है। उनकी इसी प्रवृत्ति को मैं एक प्रोत्साहन मानकर यह सब करने को उद्यत हुआ हूँ। कैथी लिपि के जानकारों की संख्या प्रायः नगण्य सा हो चुका है। अतः इसमें प्राण फूँकने हेतु इस तरह की पुस्तक का निर्माण अत्यावश्यक जान पड़ा। पता नहीं कितने लोग इससे लाभ उठा पायेंगे। जो भी हो "वृक्ष कबहुँ नहि फल भखै नदी न संचै नीर। परमारथ के कारणे साधुन धरा शरीर॥" अधिक से अधिक लोग कैथी सीखें - यही सहज कामना है।

कैथी – भाषा हिन्दी

श्री भैरव व्यास द्वारा की शोध परक पुस्तक 'कैथी लिपि का इतिहास'
का मैंने उत्सुकता पूर्वक अवलोकन किया और इनकी अन्वेषी
दृष्टि और अथक साधना से आस्वादित हुआ। इनके नीतान्त
नीरस अनुसंधित्सु की उत्कट प्रक्रिया और अपनी कृति के पाठक
का धैर्य है। वस्तुतः 'लिपि' का इतिहास मानव सभ्यता के
विकास के साथ जुड़ा है। आधुनिक लिपि के संकेत चिन्हों का प्रयोग
और प्रयोजन का आधार प्रकृति और जीवन के विभिन्न उपादान
रहे हैं। मनुष्य के अनुकरण की सहज प्रवृत्ति होती है। उनकी
इसी प्रवृत्ति को मैं एक प्रोत्साहन आलम्बन प्रदान करने को उद्यत
हुआ हूँ। कैथी लिपि के जानकारों की संख्या। प्रायः नगण्य सी
हो चुकी है। अतः इसके पुनः पुनर्जीवित हेतु इस तरह की पुस्तक का
किसी न किसी रूप में प्रकाशन आवश्यक था। पता नहीं कितने लोग इससे लाभ
उठा पायेंगे। जो भी हो यह कबहूँ नहि छूटन पावै यही न सोचें
मेरा। पुनरुत्थान के कारण शायद पता नहीं। अधिक से
अधिक लोग कैथी सीखें - यही अपेक्षा है।

देवनागरी - भाषा हिन्दी

श्री भैरव लाल दास की शोधपरक पुस्तक "कैथी लिपि का इतिहास" का मैंने उत्सुकता पूर्वक अवलोकन किया और इनकी अन्वेषी-दृष्टि और अथक साधना से आश्वस्त हुआ। इनके भीतर एक अनुसंधित्सु की उत्कट जिज्ञासा और लम्बी दूरी के धावक का धैर्य है।

वस्तुतः 'लिपि' का इतिहास मानव सभ्यता के विकास के साथ जुड़ा है। भाषा और लिपि में संकेत चिन्हों का प्रयोग और प्रचलन का आधार प्रकृति और जीवन के विभिन्न उपादान रहे हैं। मनुष्य में अनुकरण की सहज प्रवृत्ति होती है। उनकी इसी प्रवृत्ति को मैं एक प्रोत्साहन मानकर यह श्रम करने को उद्यत हुआ हूँ। कैथी लिपि के जानकारों की संख्या प्रायः नगण्य सा हो चुका है। अतः इसमें प्राण फूंकने हेतु इस तरह की पुस्तक का निर्माण अत्यावश्यक जान पड़ा। पता नहीं कितने लोग इससे लाभ उठा पायेंगे। जो भी हो "वृक्ष कबहुँ नहि फल भखै नदी न सींचें नीर। परमारथ के कारणे साधुन धरा शरीर॥"

अधिक से अधिक लोग कैथी सीखें - यही सहज कामना है।

कैथी - भाषा हिन्दी

श्री गौरव व्यास द्वारा की शोधपरक पुस्तक 'कैथी लिपि का इतिहास' का मैंने उत्सुकता पूर्वक अवलोकन किया और इनकी अन्वेषी दृष्टि और अथक प्रयास से आश्वस्त हुआ। इनके भीतर एक अनुसंधित्सु की उत्कट जिज्ञासा और अजब धुनी के पावक का योग है। वस्तुतः 'लिपि' का इतिहास मानव सभ्यता के विकास के साथ जुड़ा है। प्राचीन लिपि के संकेत चिन्हों का प्रयोग और प्रचलन का आधार प्रकृति और जीवन के विभिन्न उपादान रहे हैं। मनुष्य में अनुकरण की सहज प्रवृत्ति होती है। उनकी इसी प्रवृत्ति को मैं एक प्रोत्साहन आलम्बन प्रस्तुत करने को उद्यत हुआ हूँ। कैथी लिपि के जानकारों की संख्या प्रायः नगण्य सी हो चुकी है। अतः इसके प्रचार प्रसार हेतु इस तरह की पुस्तक का निर्माण अत्यावश्यक जान पड़ा। पता नहीं कितने लोग इससे लाभ उठा पायेंगे। जो भी हो पूज्य कबहूँ नहि थल जुपै नहीं न सौंपै बीर। पुनश्च थके कारण सायुज पराक्रमी। अधिक से अधिक लोग कैथी सीखें - यही शुभकामना है।

पुरानी मुद्रा १९५७ से पूर्व

१ पैसा	)।
२ पैसा	)॥
३ पैसा	)।॥
१ आना	-)
सवा आना	-)।
डेढ़ आना	-)॥
पौने दो आना	-)।॥
२ आना	=)
सवा दो आना	=)।
अढ़ाई आना	=)॥
पौने तीन आना	=)।॥
३ आना	≡)
सवा तीन आना	≡)।
साढ़े तीन आना	≡)॥
पौने चार आना	≡)।॥
४ आना (१/४ रुपया)	।)
५ आना	।-)
६ आना	।=)
७ आना	।≡)
८ आना (१/२ रुपया)	॥)
९ आना	॥-)
१० आना	॥=)
११ आना	॥≡)
१२ आना (जैसे ३/४ रुपया)	।॥)
१३ आना	।॥-)
१४ आना	।॥=)
१५ आना	।॥≡)
१ रुपया	१)

३ पाई = १ पैसा
४ पैसा = १ आना
४ आना = १/४ रुपैया
८ आना = १/२ रुपैया
१२ आना = ३/४ रुपैया
१६ आना = १ रुपैया
६४ पैसा = १ रुपैया

१९५७ के बाद का सिक्का

१ नया पैसा
२ नया पैसा
३ नया पैसा = आधा आना
६ " " = १ आना
१२ " " = २ आना
१९ " " = ३ आना
२५ " " = ४ आना
३१ " " = ५ आना
३८ " " = ६ आना
४४ " " = ७ आना
५० " " = ८ आना
५६ " " = ९ आना
६२ " " = १० आना
६९ " " = ११ आना
७५ " " = १२ आना
८१ " " = १३ आना
८६ " " = १४ आना
९३ " " = १५ आना
१०० " " = १ रुपैया (१६ आना)

तौल (वजन) ठोस पदार्थ (लिखना)

ऽ—	१ छटाक	२ऽ	—	२ सेर
ऽ=	२ (दो) छटाक	३ऽ	—	३ सेर
ऽ≡	३ छटाक	४ऽ	—	४ सेर
ऽ।.	१ पाव	४ऽ—	—	४ सेर १ छटाक
ऽ।—	१।. पाव	४ऽ=	—	४ सेर २ "
ऽ।=	१॥. पाव	४ऽ≡	—	४ सेर ३ "
ऽ।≡	१॥। पाव	४ऽ।	—	४।. सेर
ऽ॥.	२ पाव	४ऽ।—	—	४ सेर ५ "
ऽ॥—	२।. पाव	४ऽ।=	—	४ सेर ६ "
ऽ॥=	२॥. पाव	४ऽ।≡	—	४ सेर ७ "
ऽ॥≡	२॥। पाव	४ऽ॥.	—	४॥. सेर
ऽ॥।	३ पाव	४ऽ॥—	—	४ सेर ९ "
ऽ॥।—	३।. पाव	४ऽ॥=	—	४ सेर १० "
ऽ॥।=	३॥. पाव	४ऽ॥≡	—	४ सेर ११ "
ऽ॥।≡	३॥। पाव	४ऽ॥।.	—	४॥। सेर "
१ऽ	१ सेर	४ऽ॥।—	—	४ सेर १३ छटाक
१ऽ।—	१ सेर पाँच छटाक	४ऽ॥।=	—	४ सेर १४ छटाक
		४ऽ॥।≡	—	४ सेर १५ छटाक
		५ऽ	—	५ सेर
		१०ऽ	—	१० सेर
		२०ऽ	—	२० सेर
		३०ऽ	—	३० सेर
		४०ऽ	—	४० सेर

= १ मन

= ३६-३२४

१०० किलो ग्राम = १ क्विंटल

जानें

८ खसखस	=	१ चावल
८ चावल	=	१ रत्ती
८ रत्ती	=	१ मासा
१२ मासा	=	१ तोला
५ तोला	=	१ छटाक
४ छटाक	=	१ पाव
२ पाव	=	१/२ सेर
४ पाव	=	१ सेर
४० सेर	=	१ मन

नोट १।— सवा १॥.— डेढ़ १॥।. पौने दो पढ़िये।

सबैया

१।	१३।।।	२६।	३८।।।	५१।
२॥	१५	२७॥	४०	५२॥
३।।।	१६।	२८।।।	४१।	५३।।।
५	१७॥	३०	४२॥	५५
६।	१८।।।	३१।	४३।।।	५६।
७॥	२०	३२॥	४५	५७॥
८।।।	२१।	३३।।।	४६।	५८।।।
१०	२२॥	३५	४७॥	६०
११।	२३।।।	३६।	४८।।।	६१।
१२॥	२५	३७॥	५०	६२॥

६३।।।	७६।	८८।।।	८१०१।	११३।।।
६५	७७॥	९०	१०२॥	११५
६६।	७८।।।	९१।	१०३।।।	११६।
६७॥	८०	९२॥	१०५	११७॥
६८।।।	८१।	९३।।।	१०६।	११८।।।
७०	८२॥	९५	१०७॥	१२०
७१।	८३।।।	९६।	१०८।।।	१२१।
७२॥	८५	९७॥	११०	१२२॥
७३।।।	८६।	९८।।।	१११।	१२३।।।
७५	८७॥	१००	११२॥	१२५
			११३॥	

पढ़ने का ढंग

एक सावा सावा
दो सवा अढ़ाइ
तीन सावा पौने चार
चार सावा पाँच
पाँच सावा सावा छौ
छ: सवा साढे सात
सात सावँये पौने नौ
आठ सावा दस
नौ सावा सावा एगारह
दस सवैये साढे बारह
एगारह सवैये पौने चौदह
बारह सावा पन्द्रह
तेरह सावा सावा सोलह
चौदह सावा साढे सतरह
पन्द्रह सावा पौने उन्नीस
सोलह सावा बीस इत्यादि

ड्योढ़ा

१॥	१६॥	३१॥	४६॥	६१॥
३	१८	३३	४८	६३
४॥	१९॥	३४॥	४९॥	६४॥
६	२१	३६	५१	६६
७॥	२२॥	३७॥	५२॥	६७॥
९	२४	३९	५४	६९
१०॥	२५॥	४०॥	५५॥	७०॥
१२	२७	४२	५७	७२
१३॥	२८॥	४३॥	५८॥	७३॥
१५	३०	४५	६०	७५.

७६॥	९१॥	१०६॥	१२१॥	१३६॥
७८	९३	१०८	१२३	१३८
७९॥	९४॥	१०९॥	१२४॥	१३९॥
८१	९६	१११	१२६	१४१
८२॥	९७॥	११२॥	१२७॥	१४२॥
८४	९९	११४	१२९	१४४
८५॥	१००॥	११५॥	१३०॥	१४५॥
८७	१०२	११७	१३२	१४७
८८॥	१०३॥	११८॥	१३३॥	१४८॥
९०	१०५	१२०	१३५	१५०

पढ़ने का ढँग

एक ड्योढ़े डेढ़
दो ड्योढ़े तीन
तीन ड्योढ़े साढ़े चार
चार ड्योढ़े छह
पाँच ड्योढ़े साढ़े सात
छह ड्योढ़े नौ
सात ड्योढ़े साढ़े दस
आठ ड्योढ़े बारह

नौ ड्योढ़े साढ़े तेरह
दस ड्योढ़े पन्द्रह
ग्यारह ड्योढ़े साढ़े सोलह
बारह ड्योढ़े अठारह
तेरह ड्योढ़े साढ़े उन्नीस
चौदह ड्योढ़े इक्कीस
पन्द्रह ड्योढ़े साढ़े बाइस
सोलह ड्योढ़े चौबीस

अढ़ैया (२॥ का)

२॥	२७॥	५२॥	७७॥	१०२॥	१२७॥	१५२॥
५	३०	५५	८०	१०५	१३०	१५५
७॥	३२॥	५७॥	८२॥	१०७॥	१३२॥	१५७॥
१०	३५	६०	८५	११०	१३५	१६०
१२॥	३७॥	६२॥	८७॥	११२॥	१३७॥	१६२॥
१५	४०	६५	९०	११५	१४०	१६५
१७॥	४२॥	६७॥	९२॥	११७॥	१४२॥	१६७॥
२०	४५	७०	९५	१२०	१४५	१७०
२२॥	४७॥	७२॥	९७॥	१२२॥	१४७॥	१७२॥
२५	५०	७५	१००	१२५	१५०	१७५

१७७॥	२०२॥	२२७॥	**पढ़ने का ढंग**
१८०	२०५	२३०	१ अढ़े अढ़ाई
१८२॥	२०७॥	२३२॥	२ अढ़े पाँच
१८५	२१०	२३५	३ अढ़े साढ़े सात
१८७॥	२१२॥	२३७॥	४ अढ़े दस
१९०	२१५	२४०	५ अढ़े साढ़े बारह
१९२॥	२१७॥	२४२॥	६ अढ़े पन्द्रह
१९५	२२०	२४५	७ अढ़े साढ़े सत्रह
१९७॥	२२२॥	२४७॥	८ अढ़े बीस
२००	२२५	२५०	९ अढ़े साढ़े बाइस
			१० अढ़े पच्चीस

हुद्दा (३॥ का)

३॥	३८॥	७३॥	१०८॥	१४३॥
७	४२	७७	११२	१४७
१०॥	४५॥	८०॥	११५॥	१५०॥
१४	४९	८४	११९	१५४
१७॥	५२॥	८७॥	१२२॥	१५७॥
२१	५६	९१	१२६	१६१
२४॥	५९॥	९४॥	१२९॥	१६४॥
२८	६३	९८	१३३	१६८
३१॥	६६॥	१०१॥	१३६॥	१७१॥
३५	७०	१०५	१४०	१७५

ढ्योंचा ४॥ का अर्जा होता है,
इसका टेबुल खुद बनाया जा सकता है।
चुंकि यह सब अब प्रचलन में नहीं है
इसलिए मात्र स्मरण हेतु बताया गया।

पढ़ने का ढंग
एक हुद्दे साढ़े तीन
दो हुद्दे सात
तीन हुद्दे साढ़े दस
चार हुद्दे चौदह
पाँच हुद्दे साढ़े सत्रह
छह हुद्दे एक्कीस
सात हुद्दे साढ़े चौबीस
आठ हुद्दे अठाइस
नौ हुद्दे - साढ़े इकतीस
दस हुद्दे पैंतीस
- - - -इसी क्रम में

समाप्त